दीपचन्द्र निर्मोही

स्वतंत्रता संग्राम का रोमांचक सच

स्वतन्त्रता-संग्राम का रोमांचक सच

स्वतन्त्रता-संग्राम का रोमांचक सच

दीपचन्द्र निर्मोही

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-93-95380-42-3

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-22825424, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण
राधेश्याम

मुद्रक
अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

SWATANTRATA SANGRAM KA ROMANCHAK SACH
by Deepchandra Nirmohi

सबके लिए ज़रूरी किताब

करीब दो हज़ार वर्षों की गुलामी से भारत को आज़ाद कराना आसान काम नहीं था। 1857 में स्वतन्त्रता-संग्राम की जो चिनगारी फूटी तो लगभग पूरे देश में फैल गयी। मंज़िल बेशक नहीं मिली, पर आज़ादी का जज़्बा और संघर्ष जारी रहा। बीसवीं सदी में आज़ादी के मतवालों ने नये सिरे से आन्दोलन में प्राण फूँके। एक तरफ़ साम्राज्यवादी सत्ता थी, तो दूसरी तरफ़ आन्दोलन को हर प्रान्त तक फैलाने को प्रतिबद्ध हमारे आज़ादी के सूरमे। क्रान्ति की यह मुहिम किस तरह जन-क्रान्ति में बदलती गयी–इसे जानना बड़ा ही दिलचस्प है। इससे जुड़े ज़रूरी और रोचक किस्से दीपचन्द्र निर्मोही ने 'स्वतन्त्रता-संग्राम का रोमांचक सच' पुस्तक में बयान किये हैं। श्री निर्मोही स्वयं 1957 में हिन्दी भाषा के लिए अम्बाला और पटियाला की जेलों में यातनाओं के भुक्तभोगी रहे हैं।

यह किताब सबके लिए पढ़ना इसलिए ज़रूरी है कि इतने बड़े फलक पर हुए संग्राम की एक झलक इससे ज़रूर मिल जाती है। इसके किस्सों के नाम, सहज वर्णन और सरल भाषा आपसे अपने को स्वयं ही पढ़वा लेंगे। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चन्द्रशेखर आज़ाद, दुर्गा भाभी ही नहीं, भगवतीचरण वोहरा, शिव वर्मा, यतीन्द्रनाथ दास, जयगोपाल, हंसराज, प्रेमदत्त आदि के किस्से पढ़कर आपको गर्व भी होगा और आश्चर्य भी। नयी पीढ़ी को यह जानना ज़रूरी है कि आज़ादी के ये रखवाले चढ़ती जवानी की उम्र में कैसे हरदम मौत के साये में रहकर आन्दोलन को आगे बढ़ाते रहे, यातनाएँ सहते हुए भी वतन की आबरू को सबसे ऊपर रखकर कैसे काम करते रहे। यह संग्राम आज़ादी के दीवानों के सपनों, साहस और त्याग की अद्‌भुत मिसाल है।

इतिहास को रोचकता के साथ पेश करना एक कला है, जो इस किताब में शुरू से आख़िर तक मौजूद है। आप ये किस्से पढ़ना शुरू करेंगे, तो पढ़ते चले जायेंगे और अन्त में अपने भीतर एक नये जज़्बे को पायेंगे।

अशोक भाटिया
94161-52100

विषय सूची

सबके लिए ज़रूरी किताब 5
- मौत के साये में 9
- नन्द गोपाल नहीं झुके जेल अधिकारियों के समक्ष 12
- और पागल घोषित कर दिया नौनी गोपाल 14
- रातभर चक्की पर बैठे रहे 16
- दो बहादुर किशोरियाँ 19
- और वह हँसता रहा 21
- यूँ जिये क्रान्ति के रखवाले 22
- गरीबी के दिन 24
- हाँ, आज़ाद तो हम हैं ही 25
- आज़ाद का हाथ टूट गया 27
- भूतों की बँध गयी घिग्घी 29
- घी पी जाता 31
- हम क्रान्तिकारी हैं, हत्यारे नहीं 33
- डाका डालना धन्धा नहीं मजबूरी 35
- दल का कठोर अनुशासन 37
- मुँह पर थप्पड़ जड़ दिया 40
- क्रान्तिकारी वात्स्यायन यों हो गये लेखक अज्ञेय 42
- पुलिस दरवाज़ा पीटती रही 44
- छाती से बाँध लिये हथियार 46
- मौत मँडराती तो रही पर... 48
- वतन की आबरू 51

- कर दिया धमाका 53
- गोली गले में फँस गयी 56
- दरोगा की छाती पर ठोंक दी लात 58
- धरती माँ की गोद में समा गये भगवतीचरण 59
- हम युद्धबन्दी हैं 61
- आज़ादी के लिए समर्पण 62
- शहीद हो गये यतीन्द्रनाथ 63
- मस्ती का आलम 65
- हँस पड़ी लड़की 67
- कफन में आखिरी कील 69
- रोटियाँ न मिल सकीं 71
- उँगलियाँ पिस्तौल के घोड़े पर सधी थीं 73
- फिर लौटूँगा नहीं 75
- और राजगुरु अकेले ही निकल पड़े 77
- अदालत में सन्नाटा 79
- यातनाएँ सहन कर सकता हूँ कि नहीं 81
- सुखदेव मौन हो गया 83
- शहीद के सम्मान में 84
- पुलिस हार गयी 85
- अपनी सुध नहीं थी, पर... 86
- फाँसी पहले ही तय थी 87
- और ठहाका लगाकर हँस पड़े 89
- कहेंगे मौत से डर गया 90
- जरा ठहरो 91
- अन्तहीन यात्रा 92
- एक उदास भोर 94

मौत के साये में

भयानक सन्नाटे के साथ साँझ धीरे-धीरे उतर रही थी। सैकड़ों निहत्थे और शान्तिपूर्ण ढंग से अमृतसर के जलियाँवाले बाग में सभा कर रहे भारतीयों का क़ातिल जनरल डायर अभी-अभी वहाँ से लौट गया था। वे लोग जिनके परिजन सभा में भाग लेने के लिए आये थे, दबे पाँव तेजी से बाग की ओर बढ़ रहे थे। उनके मन भारी थे और चेहरे उदास। उनकी आँखों की पलकें आँसुओं से तर हो गयी थीं। वे सभी उतावली में थे और भयभीत भी। वे जानते थे कि रात के आठ बजते ही कर्फ्यू का दूसरा चरण आरम्भ हो जायेगा, जिसमें नगरवासियों के घर से बाहर निकलने पर गोली मार देने के आदेश की घोषणा नगर में पहले ही हो चुकी थी।

अतर कौर को अपने पति और नत्थूराम को अपने भाई की लाश मिल गयी थी। बिना साधन अकेले लाश को घर तक ले जाने की कोई सम्भावना नहीं थी। वहाँ सभी विपत्ति के मारे घूम रहे थे। सभी में एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति थी। उन दोनों को सहायक मिल गये तो वे लाशों को लेकर अपने-अपने घर की तरफ़ चल दिये कि तभी दो महिलाओं के साथ रत्न देवी ने बिलखते हुए बाग की चारदीवारी में प्रवेश किया। यद्यपि महिलाएँ भी दु:खी थीं, पर उन्होंने धीरज से काम लिया और रत्न देवी को समझाया कि इस समय हौसला रखने से ही काम चलेगा, मन को कमज़ोर मत पड़ने दे। रत्न देवी सँभल गयी। उसने हिम्मत की और पति को तलाशना आरम्भ किया। उसका मन दुविधा में उथल-पुथल हो रहा था। चीखने और सिसकने की आवाज़ें उसे बेचैन कर रही थीं। इन्हीं आवाज़ों में से वह पति की परिचित आवाज़ को पहचानने की असफल कोशिश कर रही थी। कहीं-कहीं कई-कई लाशें ऊपर-नीचे पड़ी थीं ख़ून से लथपथ। जी